नागरिकता

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» नागरिकता: अर्थ और महत्व

प्रश्न 1 (आसान). नागरिकता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर – नागरिकता किसी राजनीतिक समुदाय की पूर्ण और समान सदस्यता है।

प्रश्न 2 (आसान). हमें 'भारतीय' कहने का आधार क्या है?

उत्तर – हमें 'भारतीय' कहने का आधार हमारी भारतीय नागरिकता है, जो हमें एक सामूहिक राजनीतिक पहचान देती है।

प्रश्न 3 (मध्यम). नागरिकता के कारण हमें कौन से दो बुनियादी अधिकार मिलते हैं?

उत्तर – नागरिकता के कारण हमें मतदान का अधिकार और अभिव्यक्ति की आज़ादी जैसे बुनियादी अधिकार मिलते हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). उन लोगों की स्थिति कैसी होती है जिनके पास किसी भी देश की नागरिकता नहीं होती?

उत्तर – जिन लोगों के पास किसी देश की नागरिकता नहीं होती (जैसे शरणार्थी), उन्हें कोई राष्ट्र अधिकारों की गारंटी नहीं देता और वे आम तौर पर असुरक्षित स्थिति में जीवनयापन करते हैं।

» नागरिकों के अधिकार और दायित्व

प्रश्न 5 (आसान). आपको अपने 'अभिव्यक्ति की आज़ादी' का अधिकार कैसे इस्तेमाल करना चाहिए?

उत्तर – अपनी बात शांतिपूर्ण तरीके से कहनी चाहिए और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

प्रश्न 6 (आसान). कौन सा अधिकार आपको अपनी पसंद के स्कूल में पढ़ने की आज़ादी देता है?

उत्तर – शिक्षा का 'सामाजिक-आर्थिक अधिकार'।

प्रश्न 7 (मध्यम). कानूनों का पालन करना और टैक्स भरना – ये किस प्रकार के दायित्व हैं?

उत्तर – ये 'कानूनी दायित्व' हैं, जो देश के सुचारु संचालन के लिए ज़रूरी हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). आपके अनुसार, एक नागरिक के 'अधिकार' और 'दायित्व' आपस में कैसे जुड़े हुए हैं? एक उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर – अधिकार और दायित्व एक-दूसरे के पूरक हैं। अगर हमें 'साफ पर्यावरण में रहने का अधिकार' है, तो हमारा 'नैतिक दायित्व' है कि हम 'पर्यावरण को स्वच्छ रखने में योगदान दें', पेड़ लगाएं और कचरा न फैलाएं।

» समान सदस्यता के लिए संघर्ष

प्रश्न 9 (आसान). हमारे देश में 'समान सदस्यता' के लिए हुए किन्हीं दो आंदोलनों के नाम बताओ।

उत्तर – महिला आंदोलन, दलित आंदोलन।

प्रश्न 10 (आसान). अगर किसी को 'पूर्ण और समान सदस्यता' नहीं मिलती तो उसे कैसा महसूस होगा?

उत्तर – उसे भेदभाव, अन्याय और अपमान महसूस होगा।

प्रश्न 11 (मध्यम). दक्षिण अफ्रीका में 'श्वेत और काले लोगों के लिए पृथक मुहल्ले' का क्या मतलब था और यह 'समान सदस्यता' के खिलाफ कैसे था?

उत्तर – 'पृथक मुहल्ले' का मतलब था कि गोरे और काले लोगों के रहने की जगहें अलग-अलग थीं। यह 'समान सदस्यता' के खिलाफ इसलिए था क्योंकि इससे काले लोगों को समान सुविधाएँ और स्वतंत्रता नहीं मिलती थी, और उन्हें दूसरे इलाकों में जाने के लिए पाबंदियाँ थीं।

प्रश्न 12 (कठिन). आज के समय में 'पूर्ण और समान सदस्यता' के लिए दुनिया भर में चल रहे आंदोलनों के पीछे क्या मुख्य कारण हो सकते हैं? कोई दो कारण बताओ।
उत्तर – मुख्य कारण हो सकते हैं 'आजीविका, चिकित्सा या शिक्षा जैसी सुविधाओं का सीमित होना' जिससे 'बाहरी' लोगों को रोका जाता है, और 'कुछ नौकरियों या कामों को राज्य के मूल निवासियों तक सीमित रखने' की माँग। गरीबी और कुशल-अकुशल प्रवासी को लेकर भेदभाव भी कारण हो सकते हैं।

» संपूर्ण और समान सदस्यता का अर्थ और चुनौतियाँ

प्रश्न 13 (आसान). 'संपूर्ण और समान सदस्यता' का क्या अर्थ है?
उत्तर – सभी नागरिकों को देश में कहीं भी समान अधिकार और अवसर मिलना।

प्रश्न 14 (आसान). भारत के संविधान में नागरिकों को कौन-सा अधिकार दिया गया है जो उन्हें कहीं भी जाने की अनुमति देता है?
उत्तर – गमनागमन की स्वतंत्रता।

प्रश्न 15 (मध्यम). स्थानीय बनाम बाहरी लोगों के बीच विवाद 'संपूर्ण और समान सदस्यता' के सिद्धांत के लिए चुनौती क्यों है?
उत्तर – क्योंकि यह लोगों को देश के किसी भी हिस्से में समान रूप से रहने और काम करने से रोकता है, जो 'समान सदस्यता' के खिलाफ है।

प्रश्न 16 (कठिन). क्या आप सहमत हैं कि गरीब और अकुशल कामगारों को कुशल कामगारों की तरह देश में कहीं भी रहने और काम करने का समान अधिकार है? अपने जवाब के समर्थन में तर्क दें।
उत्तर – हाँ, मैं सहमत हूँ। संविधान सभी नागरिकों को 'समान अधिकार' देता है, चाहे उनकी आर्थिक स्थिति या कौशल कुछ भी हो। 'संपूर्ण और समान सदस्यता' का मतलब है कि हर नागरिक को 'भेदभाव' (discrimination) के बिना देश में कहीं भी 'रहने' और 'काम करने' का 'मौका' (chance) मिलना चाहिए। यह 'लोकतंत्र' का मूल सिद्धांत है।

» समान अधिकारों की गारंटी: शहरी गरीब और हाशिए के लोग

प्रश्न 17 (आसान). झोपड़पट्टियों में रहने वाले लोग शहर के लिए क्या उपयोगी काम करते हैं?
उत्तर – वे फेरीवाले, छोटे व्यापारी, सफाईकर्मी, घरेलू नौकर या मिस्त्री जैसे काम करते हैं।

प्रश्न 18 (आसान). आदिवासी लोग अपनी आजीविका के लिए किस पर निर्भर करते हैं?
उत्तर – वे 'जंगल और अन्य प्राकृतिक संसाधनों' पर निर्भर करते हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). सरकार को 'समान अधिकारों की गारंटी' देते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर – सरकार को सभी नागरिकों को 'बुनियादी अधिकारों और न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी' देनी चाहिए, और विभिन्न समूहों की 'अलग-अलग ज़रूरतों और दावों' का भी ध्यान रखना चाहिए।

प्रश्न 20 (कठिन). क्या सभी नागरिकों पर समान नीतियां लागू करना ही 'समान अधिकार' का अर्थ है? समझाओ।
उत्तर – नहीं, 'समान अधिकार' का मतलब यह नहीं कि सभी लोगों पर समान नीतियां लागू हों। बल्कि, इसका मतलब है कि लोगों को 'अधिक बराबरी' पर लाने के लिए, उनकी 'विभिन्न ज़रूरतों और दावों' को समझते हुए नीतियां बनाई जाएं।

» नागरिकता, समानता और अधिकार का मार्शल का सिद्धांत

प्रश्न 21 (आसान). मार्शल ने नागरिकता में कितने प्रकार के अधिकार शामिल किए हैं?
उत्तर – तीन प्रकार के।

प्रश्न 22 (आसान). जीवन और आज़ादी की सुरक्षा किस प्रकार के अधिकार में आती है?
उत्तर – नागरिक अधिकार।

प्रश्न 23 (मध्यम). मार्शल के अनुसार, नागरिकता की कुंजी संकल्पना क्या है?
उत्तर – समानता।

प्रश्न 24 (कठिन). टी.एच. मार्शल ने नागरिकता को क्या परिभाषित किया है और इस परिभाषा का क्या महत्व है?
उत्तर – मार्शल ने नागरिकता को 'किसी समुदाय के पूर्ण सदस्यों को प्रदत्त प्रतिष्ठा' के रूप में परिभाषित किया है। इसका महत्व यह है कि यह दर्शाता है कि नागरिकता केवल कानूनी स्थिति नहीं, बल्कि एक सम्मान और अधिकारों का समूह है जो सभी पूर्ण सदस्यों को समान रूप से मिलता है।

» नागरिक और राष्ट्र: पहचान और समावेशन

प्रश्न 25 (आसान). राष्ट्रीय पहचान को व्यक्त करने वाले किन्हीं दो प्रतीकों के नाम बताइए।
उत्तर – झंडा और राष्ट्रगान।

प्रश्न 26 (आसान). कौन से देश ने 1789 में सबसे पहले लोकतांत्रिक अधिकारों का दावा किया था?
उत्तर – फ्रांस।

प्रश्न 27 (मध्यम). 'समावेशी राष्ट्रीय पहचान' से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – समावेशी राष्ट्रीय पहचान का अर्थ है ऐसी राष्ट्रीय पहचान जो देश के सभी नागरिकों, उनकी विविध धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के बावजूद, खुद को राष्ट्र के अभिन्न अंग के रूप में महसूस करने की अनुमति देती है।

प्रश्न 28 (कठिन). आपको क्यों लगता है कि कुछ देशों के लिए अपनी राष्ट्रीय पहचान को समावेशी बनाना दूसरों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण होता है? एक कारण बताइए।
उत्तर – कुछ देशों के लिए समावेशी पहचान बनाना चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि उनकी राष्ट्रीय पहचान किसी एक प्रमुख संस्कृति, धर्म या भाषा पर बहुत अधिक निर्भर करती है। ऐसे में, अल्पसंख्यक समूहों को अपनी पहचान बनाए रखते हुए राष्ट्रीय मुख्यधारा से जुड़ना मुश्किल हो जाता है, जिससे टकराव उत्पन्न हो सकता है।

» भारत में नागरिकता: समावेशी दृष्टिकोण

प्रश्न 29 (आसान). भारत में नागरिकता प्राप्त करने के किन्हीं दो तरीकों के नाम बताओ।
उत्तर – जन्म से, वंश-परंपरा से।

प्रश्न 30 (आसान). भारतीय संविधान किन आधारों पर नागरिकों के साथ भेदभाव की मनाही करता है? कोई एक आधार बताओ।
उत्तर – धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान।

प्रश्न 31 (मध्यम). भारतीय संविधान ने नागरिकता के मामले में 'समावेशी दृष्टिकोण' क्यों अपनाया? एक कारण स्पष्ट करो।
उत्तर – क्योंकि भारत एक बहुत विविधतापूर्ण समाज है, और संविधान निर्माताओं ने सभी समुदायों (जैसे SC, ST, महिलाएँ) को पूर्ण और समान नागरिकता देकर सबको साथ लाने की कोशिश की।

प्रश्न 32 (कठिन). भारतीय नागरिकता के समावेशी प्रावधानों के बावजूद, कुछ समूहों द्वारा संघर्ष और विवादों को जन्म क्यों दिया गया है?
उत्तर – क्योंकि कुछ समूहों को लगता है कि उनकी नागरिकता के पूर्ण अधिकार अभी भी पूरे नहीं हुए हैं या वे हाशिये पर धकेले जा रहे हैं, इसलिए वे अपनी मांगों को पूरा करने के लिए संघर्ष करते हैं।

» सार्वभौमिक नागरिकता और राज्यहीन लोग

प्रश्न 33 (आसान). राज्यहीन लोग कौन होते हैं?
उत्तर – वे लोग जिनके पास किसी भी देश की नागरिकता नहीं होती।

प्रश्न 34 (आसान). क्या शरणार्थी और अवैध आप्रवासी एक ही होते हैं?
उत्तर – नहीं, वे अलग हो सकते हैं, हालाँकि दोनों 'राज्यहीन' हो सकते हैं।

प्रश्न 35 (मध्यम). सार्वभौमिक नागरिकता की अवधारणा 'राज्यहीन' लोगों की मदद कैसे कर सकती है?
उत्तर – यह उन्हें बुनियादी मानवीय अधिकार और एक पहचान दिलाने में मदद कर सकती है, भले ही उनके पास किसी देश की नागरिकता न हो।

प्रश्न 36 (कठिन). भारत जैसे देश शरणार्थियों को आश्रय देने में क्या संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं? इसमें क्या चुनौतियाँ आती हैं?
उत्तर – भारत उत्पीड़न से भागे लोगों को आश्रय देने पर गर्व करता है, जैसा दलाई लामा के मामले में हुआ। लेकिन चुनौती यह है कि अनियंत्रित भीड़ को स्वीकार करने और देश की सुरक्षा के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए। सरकार को मानवीय दृष्टिकोण और राष्ट्रीय हितों दोनों को देखना पड़ता है।

» विश्व नागरिकता की अवधारणा और आवश्यकता

प्रश्न 37 (आसान). निम्नलिखित में से कौन-सी समस्या 'विश्व नागरिकता' के दायरे में आती है? (a) किसी एक राज्य में पानी की कमी (b) किसी देश में बेरोजगारी (c) जलवायु परिवर्तन (d) किसी शहर में ट्रैफिक जाम
उत्तर – (c) जलवायु परिवर्तन

प्रश्न 38 (आसान). क्या 'विश्व नागरिकता' का अर्थ अपनी राष्ट्रीय नागरिकता को त्यागना है?
उत्तर – नहीं

प्रश्न 39 (मध्यम). आप 'विश्व नागरिकता' की अवधारणा को अपने शब्दों में कैसे समझाएंगे?
उत्तर – विश्व नागरिकता का अर्थ है कि हम अपनी राष्ट्रीय पहचान के साथ-साथ, खुद को एक वैश्विक समुदाय का सदस्य भी मानें और वैश्विक समस्याओं को हल करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में विश्वास रखें।

प्रश्न 40 (कठिन). आज के अंतर्संबद्ध विश्व में 'राष्ट्रीय नागरिकता' क्यों कभी-कभी अपर्याप्त महसूस होती है? 'विश्व नागरिकता' इसे कैसे पूरा कर सकती है?
उत्तर – आज के अंतर्संबद्ध विश्व में राष्ट्रीय नागरिकता इसलिए अपर्याप्त महसूस हो सकती है क्योंकि आतंकवाद, महामारियाँ, जलवायु परिवर्तन जैसी कई समस्याएँ राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं मानतीं. कोई भी एक राष्ट्र इन्हें अकेले हल नहीं कर सकता. विश्व नागरिकता इस कमी को पूरा करती है क्योंकि यह वैश्विक सहयोग, जानकारी साझा करने और सामूहिक कार्रवाई पर ज़ोर देती है, जिससे इन समस्याओं का अधिक प्रभावी ढंग से सामना किया जा सकता है, साथ ही राज्यहीन लोगों और प्रवासियों के अधिकारों की रक्षा भी संभव हो पाती है.

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. नागरिकता का अर्थ और इसके दो मुख्य महत्व बताइए।

› पहले नागरिकता की परिभाषा समझें: 'Citizenship is full and equal membership in a political community' यानी किसी राजनीतिक समुदाय की पूर्ण और समान सदस्यता ही नागरिकता है।

› अब इसके महत्व पर विचार करें। पहला, यह हमें 'a collective political identity' देती है, जिससे हम खुद को भारतीय, जापानी आदि कहते हैं।

› दूसरा, नागरिकता हमें 'basic rights' देती है, जैसे 'voting, freedom of expression' यानी वोट डालने और अपनी बात कहने का अधिकार, जो हमारे लिए बहुत ज़रूरी हैं।

› इन दो मुख्य महत्वों के अलावा, यह हमारी सुरक्षा भी सुनिश्चित करती है, जैसा कि हमने शरणार्थियों के उदाहरण में देखा।

› संक्षेप में, नागरिकता एक देश में हमारी पहचान, अधिकार और सुरक्षा का आधार है।

उत्तर – नागरिकता किसी राजनीतिक समुदाय की पूर्ण और समान सदस्यता है। इसके दो मुख्य महत्व हैं: पहला, यह हमें एक सामूहिक राजनीतिक पहचान देती है (जैसे भारतीय होना); दूसरा, यह हमें वोट देने और अभिव्यक्ति की आज़ादी जैसे बुनियादी अधिकार प्रदान करती है।

उदाहरण 2. एक नागरिक के रूप में आपको कौन से 'राजनीतिक' और 'नैतिक' दायित्व निभाने चाहिए, उदाहरण सहित बताइए।

› पहला, 'राजनीतिक दायित्व' का मतलब है सरकार और देश की व्यवस्था में सकारात्मक रूप से हिस्सा लेना। इसका सबसे सीधा उदाहरण है 'वोट देना' और 'सही उम्मीदवार चुनना'।

› दूसरा, 'नैतिक दायित्व' वे ज़िम्मेदारियां हैं जो कानून में लिखी नहीं हैं, पर हमें एक अच्छे नागरिक के तौर पर निभानी चाहिए। जैसे, 'अपने आस-पड़ोस को स्वच्छ रखना' या 'ज़रूरतमंदों की मदद करना'।

› दोनों ही तरह के दायित्व समाज को मज़बूत और बेहतर बनाते हैं।

उत्तर – राजनीतिक दायित्व: वोट देना, सही उम्मीदवार चुनना। नैतिक दायित्व: आस-पड़ोस स्वच्छ रखना, ज़रूरतमंदों की मदद करना।

उदाहरण 3. दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद नीति के तहत अश्वेत लोगों को किन अधिकारों से वंचित रखा गया था और 'पूर्ण और समान सदस्यता' के लिए उन्होंने क्या संघर्ष किया?

› रंगभेद नीति के तहत, अश्वेत लोगों को मतदान करने, चुनाव लड़ने, संपत्ति खरीदने और देश में कहीं भी आने-जाने की आज़ादी नहीं थी। उनके लिए अलग मुहल्ले, कॉलोनियाँ और स्कूल थे।

› इन्हें 'अलग-अलग नागरिक सुविधाएँ' भी मिलती थीं - जैसे बसों, रेलगाड़ियों और होटलों में भी अलग-अलग जगहें होती थीं।

› मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे नेताओं ने इन 'पृथक्करण कानूनों' के खिलाफ 'शांतिपूर्ण और अहिंसक प्रतिरोध' का आह्वान किया।

› उन्होंने तर्क दिया कि आत्म-सम्मान के लिए सभी मनुष्य बराबर हैं और ये कानून सामाजिक घाव हैं जो लोगों को बांटते हैं।

› इस संघर्ष के बाद, 1994 में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का अंत हुआ और अश्वेत लोगों को 'पूर्ण और समान सदस्यता' मिली।

उत्तर – दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद नीति ने अश्वेत लोगों को मूल नागरिक अधिकारों (जैसे वोट, संपत्ति, आवागमन की स्वतंत्रता) से वंचित किया। मार्टिन लूथर किंग जैसे नेताओं के नेतृत्व में 'शांतिपूर्ण और अहिंसक प्रतिरोध' के संघर्ष से 1994 में यह नीति समाप्त हुई और उन्हें 'पूर्ण और समान सदस्यता' मिली।

उदाहरण 4. एक राज्य के निवासी दूसरे राज्य में काम की तलाश में जाते हैं। क्या उन्हें वहाँ के स्थानीय निवासियों के समान अधिकार मिलने चाहिए?

› पहला, 'संपूर्ण और समान सदस्यता' के सिद्धांत को समझें। इसका मतलब है कि सभी नागरिक देश के हर हिस्से में 'समान' हैं।

› दूसरा, 'गमनागमन की स्वतंत्रता' और 'रोजगार के अवसर' के अधिकार को याद करें। हमारा संविधान इन अधिकारों की गारंटी देता है।

› तीसरा, 'स्थानीय बनाम बाहरी' विवाद को पहचानें। यह एक 'चुनौती' है, पर संविधान के अनुसार यह भेदभाव गलत है।

› चौथा, निष्कर्ष निकालें। हाँ, उन्हें वहाँ के स्थानीय निवासियों के समान 'अधिकार' और 'अवसर' मिलने चाहिए, क्योंकि वे भी भारत के 'नागरिक' हैं।

उत्तर – हाँ, उन्हें वहाँ के स्थानीय निवासियों के समान अधिकार मिलने चाहिए, क्योंकि 'संपूर्ण और समान सदस्यता' का सिद्धांत सभी नागरिकों को देश में कहीं भी समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है।

उदाहरण 5. मुंबई में 'झोपड़पट्टियों में रहने वाले लोगों' के अधिकारों को लेकर सर्वोच्च न्यायालय ने क्या फैसला दिया था, और 'जीने के अधिकार' से उसका क्या संबंध है?

› सर्वोच्च न्यायालय ने 'समाजकर्मी ओल्गा टेलिस की जनहित याचिका' पर 1985 में फैसला सुनाया था।

› याचिका में दावा किया गया था कि झोपड़पट्टियों में रहने का अधिकार इसलिए जरूरी है, क्योंकि 'कार्यस्थल के निकट रहने की वैकल्पिक जगह उपलब्ध नहीं' है, और अगर उन्हें हटाया गया तो वे 'आजीविका' भी गँवा देंगे।

› सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि 'संविधान की धारा-21 में जीने के अधिकार की गारंटी दी गई है', और 'इसमें आजीविका का अधिकार शामिल है'।

› अतः, अगर 'फुटपाथवासियों को बेदखल करना हो, तो उन्हें आश्रय के अधिकार के तहत पहले वैकल्पिक जगह उपलब्ध

करानी होगी'।

› यानी, उन्हें बिना कोई और जगह दिए बेदखल नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे उनका जीने का अधिकार छिन जाएगा।

उत्तर – सर्वोच्च न्यायालय ने 'जीने के अधिकार' में 'आजीविका के अधिकार' को शामिल करते हुए फैसला दिया कि शहरी गरीबों को बेदखल करने से पहले उन्हें वैकल्पिक आश्रय देना अनिवार्य है।

उदाहरण 6. मार्शल के सिद्धांत के अनुसार, एक नागरिक के 'शिक्षा का अधिकार' और 'मतदान का अधिकार' किस प्रकार के अधिकारों में आते हैं?

› पहले 'शिक्षा का अधिकार' देखते हैं। मार्शल के अनुसार, जो अधिकार व्यक्ति के लिए शिक्षा और रोज़गार को सुलभ बनाते हैं, वे 'सामाजिक अधिकार' होते हैं।

› अब 'मतदान का अधिकार' देखते हैं। मार्शल के अनुसार, जो अधिकार व्यक्ति को शासन प्रक्रिया में सहभागी बनने की शक्ति प्रदान करते हैं, वे 'राजनीतिक अधिकार' होते हैं।

उत्तर – 'शिक्षा का अधिकार' एक 'सामाजिक अधिकार' है, और 'मतदान का अधिकार' एक 'राजनीतिक अधिकार' है।

उदाहरण 7. फ्रांस और भारत, दोनों लोकतांत्रिक देश हैं और समावेशी होने का दावा करते हैं। फिर भी, फ्रांस में स्कूलों में धार्मिक प्रतीकों पर प्रतिबंध और भारत में विविधता का उत्सव मनाने में क्या अंतर दिखाई देता है? स्पष्ट करें।

› पहले फ्रांस के दावे और उसकी नीतियों पर विचार करें: 'फ्रांस ऐसा देश है जो धर्मनिरपेक्ष और समावेशी होने का दावा करता है।' लेकिन, 'सभी नागरिकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने जीवन के सार्वजनिक पहलुओं में इस फ्रांसीसी भाषा-संस्कृति से आत्मसात हो जाएँ।' यह दर्शाता है कि फ्रांस सार्वजनिक जीवन में एक एकीकृत संस्कृति को प्राथमिकता देता है, जहाँ धार्मिक प्रतीक जैसे पगड़ी या दुपट्टा सार्वजनिक क्षेत्र (स्कूल) में स्वीकार्य नहीं हैं।

› फिर भारत के दावे और उसकी नीतियों पर विचार करें: 'भारत स्वयं को धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक राष्ट्र-राज्य कहता है।' 'स्वतंत्रता आंदोलन का आधार व्यापक था और विभिन्न धर्म, क्षेत्र और संस्कृति के लोगों को आपस में जोड़ने के कृतसंकल्प प्रयास किए गए।' भारत का संविधान भी 'धर्मनिरपेक्ष और समावेशी चरित्र को कायम रखने' के निश्चय पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि भारत में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को सार्वजनिक जीवन में भी सम्मान दिया जाता है और इसे राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा माना जाता है।

› दोनों की तुलना करें: फ्रांस का 'समावेशन' अक्सर एक साझा 'सार्वजनिक संस्कृति' (फ्रांसीसी भाषा, मूल्य) में आत्मसात होने पर जोर देता है, जबकि भारत का 'समावेशन' विभिन्न 'धार्मिक और सांस्कृतिक पहचानों' को सार्वजनिक क्षेत्र में भी बनाए रखने और उन्हें राष्ट्रीय ताने-बाने का हिस्सा मानने पर आधारित है।

उत्तर – फ्रांस का समावेशी मॉडल सार्वजनिक जीवन में एक साझा, धर्मनिरपेक्ष फ्रांसीसी संस्कृति पर जोर देता है, जिससे धार्मिक प्रतीकों को स्कूलों में अनुमति नहीं मिलती। इसके विपरीत, भारत का समावेशी मॉडल विविधता का उत्सव मनाता है और विभिन्न धार्मिक व सांस्कृतिक पहचानों को राष्ट्रीय पहचान का अभिन्न अंग मानता है, जिससे सार्वजनिक जीवन में भी इन विविधताओं को स्वीकार किया जाता है।

उदाहरण 8. मान लीजिए एक व्यक्ति, मिस्टर अहमद, जो पाकिस्तान में पैदा हुए थे, वे 2010 में भारत आए और तब से लगातार यहीं रह रहे हैं। उन्होंने भारत सरकार से भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन किया। क्या उन्हें नागरिकता मिल सकती है और किस आधार पर?

› पहला कदम: मिस्टर अहमद एक विदेशी नागरिक हैं, जो भारत में रह रहे हैं और नागरिकता चाहते हैं।

› दूसरा कदम: भारतीय नागरिकता अधिनियम के तहत, एक विदेशी व्यक्ति जो एक निश्चित अवधि (आमतौर पर 11 साल) तक भारत में रहा हो, वह 'देशीकरण' (Naturalisation) के माध्यम से भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन कर सकता है।

› तीसरा कदम: अगर मिस्टर अहमद सभी ज़रूरी शर्तें (जैसे अच्छी पृष्ठभूमि, भारत के संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ लेना आदि) को पूरा करते हैं और भारत में पर्याप्त समय तक रह चुके हैं, तो भारत सरकार उनके आवेदन को स्वीकार कर सकती है।

› चौथा कदम: इस प्रकार, मिस्टर अहमद को 'देशीकरण' के आधार पर भारतीय नागरिकता मिल सकती है, जो हमारे समावेशी दृष्टिकोण का एक उदाहरण है।

उत्तर – हाँ, मिस्टर अहमद को 'देशीकरण' (Naturalisation) के आधार पर भारतीय नागरिकता मिल सकती है, बशर्ते वह

नागरिकता अधिनियम की सभी शर्तों को पूरा करें।

उदाहरण 9. एक ऐसे परिवार की स्थिति की कल्पना कीजिए जो अपने युद्धग्रस्त देश से भागकर एक नए देश में शरण लेता है, लेकिन उसे वहाँ नागरिकता नहीं मिलती। उनके जीवन में क्या प्रमुख समस्याएँ होंगी?

› पहला कदम, वे 'राज्यहीन' कहलाएँगे क्योंकि उनके पास अब किसी देश की कानूनी पहचान नहीं है।

› दूसरा, उन्हें कानूनी रूप से काम करने का अधिकार नहीं होगा, जिससे वे आय नहीं कमा पाएँगे।

› तीसरा, उनके बच्चों को शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच में बहुत मुश्किल होगी, क्योंकि नागरिकता के बिना ये अधिकार अक्सर नहीं मिलते।

› चौथा, वे संपत्ति नहीं खरीद पाएँगे, न कोई बैंक खाता खोल पाएँगे, और न ही किसी चुनाव में वोट दे पाएँगे।

› पाँचवां, उन्हें हमेशा पकड़े जाने और वापस भेजने का डर रहेगा, जिससे वे एक स्थायी और सुरक्षित जीवन नहीं जी पाएँगे।

उत्तर – संक्षेप में, ऐसे 'राज्यहीन' परिवार को मूलभूत अधिकारों, सुरक्षा और एक गरिमापूर्ण जीवन से वंचित रहना पड़ेगा, जिससे उनका भविष्य अनिश्चित रहेगा।

उदाहरण 10. मान लीजिए एक नए तरह का वायरस चीन में उत्पन्न होता है और तेज़ी से पूरी दुनिया में फैलने लगता है. 'विश्व नागरिकता' की अवधारणा के अनुसार इस समस्या को कैसे सुलझाया जा सकता है?

› पहला कदम होगा कि 'all nations share information' – सभी देश तुरंत एक-दूसरे के साथ वायरस से जुड़ी जानकारी साझा करें, न कि उसे छुपाएं.

› दूसरा कदम, 'scientists from different countries collaborate' – विभिन्न देशों के वैज्ञानिक मिलकर उस वायरस के लिए टीका या दवा विकसित करने में सहयोग करें.

› तीसरा कदम, 'international organizations like WHO coordinate efforts' – विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ इस वैश्विक प्रयास का समन्वय करें, ताकि संसाधन सही जगह लगें.

› चौथा कदम, 'wealthier nations support less developed nations' – अमीर देश कम विकसित देशों को टीका और चिकित्सा उपकरण उपलब्ध कराने में मदद करें, क्योंकि बीमारी की कोई सीमा नहीं होती.

उत्तर – इस तरह 'विश्व नागरिकता' का विचार हमें सिखाता है कि वैश्विक समस्याओं के लिए वैश्विक समाधान और सहयोग ज़रूरी है, न कि सिर्फ अपने देश तक सीमित रहना.

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• नागरिकता की परिभाषा और उसके महत्व को कम से कम दो-तीन बिंदुओं में स्पष्ट रूप से लिखना, खासकर 'सामूहिक पहचान' और 'बुनियादी अधिकार' जैसे शब्दों का प्रयोग करना बहुत ज़रूरी है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में सीधे प्रश्न के रूप में आ सकता है, खासकर 'शहरी गरीबों' की समस्याओं और 'आदिवासियों' के अधिकारों पर सवाल पूछे जाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का उदाहरण याद रखना।

• यह सिद्धांत बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मार्शल के तीनों प्रकार के अधिकारों को उदाहरणों सहित स्पष्ट करना सीखें, और 'समानता' की केंद्रीय अवधारणा को अच्छे से समझाएं।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। फ्रांस और भारत के उदाहरणों का उपयोग करके 'समावेशन' की चुनौतियों और प्रयासों को स्पष्ट करने के प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर पूछा जाता है कि भारतीय संविधान ने नागरिकता के लिए क्या दृष्टिकोण अपनाया और इसके मुख्य प्रावधान क्या हैं। नागरिकता प्राप्त करने के विभिन्न तरीके और 'समावेशी दृष्टिकोण' शब्द की परिभाषा को अच्छे से याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'मानवाधिकार' या 'वैश्विक नागरिकता' के संदर्भ में पूछा जाता है। 'राज्यहीन' लोगों की समस्याओं और 'सार्वभौमिक नागरिकता' के विचार के बीच संबंध को अच्छे से समझकर लिखना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'विश्व नागरिकता की आवश्यकता' या 'राष्ट्रीय नागरिकता से इसका अंतर' पर सीधे प्रश्न के रूप में आती है. सुनामी और महामारियों के उदाहरणों का उपयोग कर अपनी बात को मज़बूत करना.

एक नज़र में रिवीज़न

- नागरिकता = राजनीतिक समुदाय की पूर्ण व समान सदस्यता; पहचान व अधिकार देती है।
- समान नागरिकता = बुनियादी अधिकार + न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी, सभी नागरिकों के लिए।
- मार्शल: नागरिकता, समानता, 3 अधिकार (नागरिक, राजनीतिक, सामाजिक)।
- राष्ट्र-राज्य, राष्ट्रीय पहचान के प्रतीक, समावेशी पहचान की चुनौतियाँ, भारत का मॉडल।
- भारत में नागरिकता समावेशी है; जन्म, वंश, पंजीकरण, देशीकरण से प्राप्त, भेदभाव वर्जित।
- राज्यहीन लोग बिना नागरिकता के, 'सार्वभौमिक नागरिकता' का लक्ष्य पहचान और अधिकार।
- विश्व नागरिकता: वैश्विक चुनौतियों हेतु वैश्विक सहयोग की अवधारणा.